2 जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

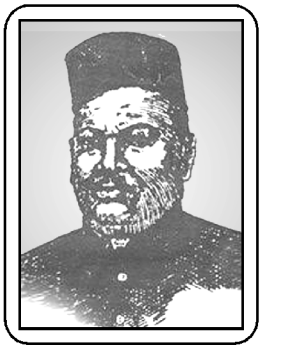

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1866 ई०।
- **जन्म-स्थान**—काशी (उ० प्र०)।
- **पिता**—पुरुषोत्तमदास।
- **प्रमुख रचनाएँ**—उद्धव शतक, गंगावतरण। श्रृंगार-लहरी, गंगा लहरी, विष्णु लहरी।
- **भाषा**—प्रौढ़ साहित्यिक-ब्रजभाषा।
- **शैली**—चित्रण, आलंकारिक तथा चमत्कारिक शैली।
- **मृत्यु**—21 जून, सन् 1932 ई०।

ब्रजभाषा की अन्तिम परम्परा के कवियों में महाकवि 'रत्नाकर जी' का प्रमुख स्थान है। इनका जन्म काशी में भाद्रपद सुदी पंचमी, सन् 1866 ई० को एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पितामह का नाम तुलाराम एवं पिता का नाम पुरुषोत्तमदास था। इनके पिता भारतेन्दु जी के मित्र थे। बचपन में इन्हें उर्दू, फारसी, अंग्रेजी की शिक्षा मिली। बी० ए०, एल-एल० बी० करने के बाद एम० ए० (फारसी) की पढ़ाई माताजी के निधन के कारण पूरी न हो सकी। 1900 ई० में अवागढ़ (एटा) के खजाने के निरीक्षक, 1902 ई० में अयोध्या नरेश के निजी सचिव तथा 1906 ई० में राजा की मृत्यु के पश्चात् महारानी के निजी सचिव बने। राजदरबार से सम्बद्ध रहने के कारण इनका रहन-सहन सामन्ती था, लेकिन प्राचीन धर्म, संस्कृति और साहित्य में गहरी आस्था थी। प्राचीन भाषाओं का ज्ञान था तथा विज्ञान की अनेक शाखाओं में इनकी गति थी। भारत के कई प्रसिद्ध तीर्थ एवं प्रमुख स्थानों का इन्होंने भ्रमण किया। विद्यार्थी काल से ही उर्दू-फारसी में कविता लिखते थे, लेकिन कालान्तर में ब्रजभाषा में रचना करने लगे। 'साहित्य-सुधानिधि' और 'सरस्वती' का सम्पादन, 'रसिक-मण्डल' का संचालन तथा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की स्थापना एवं विकास में योग दिया। अखिल भारतीय कवि सम्मेलन तथा चौथी ओरियण्टल कान्फ्रेंस के हिन्दी-विभाग के सभापति बनाये गये। हरिद्वार में 21 जून, 1932 ई० को इनका देहान्त हुआ। हिन्दी माँ को अपना रत्नाकर फिर कभी नहीं मिला।

रत्नाकर जी की काव्य-साधना, काव्य के सभी गुणों से ओत-प्रोत है। इन्होंने सूरदास से माधुर्य-भावना, तुलसीदास से प्रबन्ध पद्धति और श्रृंगारी कवियों से मुक्तक शैली ग्रहण करके अपने काव्य में इन सबका समन्वय किया है। इन्होंने अपने काव्य का विषय पौराणिक कथाओं एवं घटनाओं को बनाया है, फिर भी उनमें सूर एवं तुलसी की अपेक्षा नवीनता है। इन्होंने भक्तिकालीन भावनाओं को रीतिकालीन अलंकारमय पद्धति में अभिव्यंजित किया है। इन्हें कला-पक्ष के क्षेत्र में जितनी सफलता प्राप्त हुई है, उतनी भाव-पक्ष में। शब्द की दोनों शक्तियों-लक्षणा और व्यंजना के बल पर इन्होंने भाव और भाषा का अपूर्व समन्वय किया है।

आधुनिक चेतना की यथासम्भव उपेक्षा करते हुए मध्ययुगीन मनोवृत्ति में आकण्ठ मग्न होकर काव्य-साधना में तल्लीन कवियों में से एक जगन्नाथदास 'रत्नाकर' अपनी मध्ययुगीन प्रवृत्ति के अनुरूप मध्ययुगीन वातावरण भी खोज लिया था। मध्ययुगीन काव्य राजाश्रय में सम्पादित हुआ था और 'रत्नाकरजी' ने पहले अवागढ़ के महाराजा और फिर अयोध्या नरेश के साथ रहकर

अपने लिये उपयुक्त वातावरण प्राप्त कर लिया था। 'रत्नाकरजी' की काव्य-प्रतिभा में युगीन प्रभाव तथा आधुनिकता का भी कुछ संस्पर्श है और वह समकालीन कवियों– अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' तथा मैथिलीशरण गुप्त की भाँति कथाकाव्य की रचना में दृष्टिगत होता है। इन्हीं कवियों की भाँति रत्नाकरजी ने अपने कथा-काव्यों में राजाश्रित कवियों की भाँति केवल भावुकता का ही प्रदर्शन नहीं किया, अपितु व्यापक सहृदयता का भी परिचय दिया है।

रत्नाकरजी के गौरव-ग्रन्थों में **'उद्धव शतक'** और **'गंगावतरण'** विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। प्रथम प्रबन्ध 'मुक्तक' है और उसमें कृष्ण-काव्य का प्रसिद्ध उद्धव-गोपी संवाद नूतन काव्य-संगठन और काव्य-सौष्ठव के साथ उपस्थित किया गया है। रत्नाकरजी के **'गंगावतरण'** में उनकी काव्य-प्रतिभा का और भी व्यापक स्वरूप दृष्टिगत होता है। प्राचीन साहित्य, विशेष रूप से पुराणों के सम्यक् अनुशीलन के आधार पर लिखित इस कथा-काव्य में मर्मस्पर्शी स्थलों को भली प्रकार पहचाना गया है तथा उनका पूर्ण सरसता के साथ वर्णन किया गया है। रत्नाकरजी की मुक्तक रचनाओं के संग्रह **'श्रृंगार लहरी', 'गंगा लहरी', 'विष्णु लहरी', 'रत्नाष्टक'** आदि में यह आलंकारिक शोभा और भी स्वच्छन्द रूप से दृष्टिगत होती है। रीतिकालीन अलंकारवादियों से रत्नाकरजी की विशेषता यह है कि उनकी भाँति यह सौन्दर्य-विधान बौद्धिक व्यायाम की सृष्टि नहीं वरन् आन्तरिक प्रेरणा से सहज प्रसूत है। रत्नाकरजी अपनी इन मुक्तक रचनाओं में इस दृष्टि से भी रीतियुगीन कवियों से आगे बढ़ गये हैं कि इनमें इन्होंने पौराणिक विषयों से लेकर देशभक्ति की आधुनिक भावना तक को वाणी दी है।

आज हिन्दी-संसार का ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा जिसे यह ज्ञात न हो कि महाकवि रत्नाकर ब्रजभाषा के परम-प्रेमी और मर्मज्ञ थे। ब्रजभाषा के लिए ये बहुत समय तक ब्रज में रहे और ब्रजभाषा के साहित्य का इन्होंने आद्योपान्त अध्ययन भी किया। *''ब्रजभाषा को साहित्योचित एकरूपता देने का जो कार्य आचार्य केशव के द्वारा उठाया गया था तथा महाकवि बिहारीलाल के द्वारा आगे बढ़ाया जाकर कविवर घनानन्दादि के द्वारा प्रौढ़ किया गया था, वही बाद में रत्नाकर जी के द्वारा पूर्ण किया गया।''* अर्थात् रत्नाकर जी ने ब्रजभाषा को वह निश्चित एकरूपता दी है, जो साहित्यिक भाषा के लिए अनिवार्य ठहरती है। भाषा की सफाई, छन्द की शुद्धता, अलंकार की छटा, नयी-नयी अनूठी उक्तियाँ ही रत्नाकरजी के महाकवित्व को प्रदर्शित करती हैं।

उद्धव-प्रसंग

[प्रस्तुत काव्यांश जगन्नाथदास रत्नाकर द्वारा संवत् 1986 वि0 (सन् 1929 ई0) में रचित 'उद्धव-शतक' से अवतरित है। यहाँ कवि ने भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा मथुरा से भेजे गये उद्धव और ब्रज की गोपियों के संवाद के रूप में ज्ञान और योग के ऊपर भक्ति की विजय दिखाने का स्तुत्य प्रयास किया है। ज्ञानाहंकारी उद्धव गोपियों को ज्ञान और योग की साधना का उपदेश तो देते हैं, किन्तु गोपियाँ प्रेमपूर्ण उक्तियों के द्वारा उनके उपदेश को व्यर्थ सिद्ध कर देती हैं। अन्त में उद्धव गोपियों की प्रेम-भावना से प्रभावित होकर मथुरा लौट जाते हैं और वहाँ श्रीकृष्ण से कहते हैं कि यदि आपको सजग करने की अभिलाषा न होती तो हम ब्रजभूमि को छोड़कर इधर पैर नहीं रखते अर्थात् यहाँ कभी लौट कर नहीं आते।]

भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की
सुधि ब्रज-गाँवनि मैं पावन जबै लगीं।
कहै 'रतनाकर' गुवालिनि की झौरि-झौरि-
दौरि-दौरि नंद-पौरि आवन तबै लगीं।।
उझकि-उझकि पद-कंजनि के पंजनि पै
पेखि-पेखि पाती छाती छोहनि छबै लगीं।
हमकौं लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा,
हमकौं लिख्यौ है कहा कहन सबै लगीं।।1।।

चाहत जौ स्वबस सँजोग स्याम-सुन्दर कौ
जोग के प्रयोग मैं हियौ तौ बिलस्यो रहै।
कहै 'रतनाकर' सु-अंतर-मुखी है ध्यान
मंजु हिय-कंज-जगी जोति मैं धस्यौ रहे।।
ऐसैं करौं लीन आतमा कौ परमातमा मैं
जामैं जड़-चेतन-बिलास बिकस्यौ रहै।
मोह-बस जोहत बिछोह जिय जाकौ छोहि
सो तौ सब अंतर-निरंतर बस्यौ रहै।।2।।

सुनि सुनि ऊधव की अकह कहानी कान
कोऊ थहरानी, कोऊ थानहिं थिरानी हैं।
कहै 'रतनाकर' रिसानी, बररानी कोऊ
कोऊ बिलखानी, बिकलानी, बिथकानी हैं।।
कोऊ सेद-सानी, कोऊ भरि दृग-पानी रहीं
कोऊ घूमि-घूमि परीं भूमि मुरझानी हैं।
कोऊ स्याम-स्याम कै बहकि बिललानी कोऊ
कोमल करेजौ थामि सहमि सुखानी हैं।।3।।

कान्ह-दूत कैधौं ब्रह्म-दूत ह्वै पधारे आप
धारे प्रन फेरन कौ मति ब्रजबारी की।
कहै 'रतनाकर' पै प्रीति-रीति जानत ना
ठानत अनीति आनि रीति लै अनारी की।।
मान्यौ हम, कान्ह ब्रह्म एक ही, कह्यौ जो तुम
तौहूँ हमें भावति ना भावना अन्यारी की।

जैहै बनि बिगरि न बारिधिता बारिधि की
बूँदता बिलैहै बूँद बिबस बिचारी की।।4।।

चिंता-मनि मंजुल पँवारि धूर-धारनि मैं
काँच-मन-मुकुर सुधारि रखिबौ कहौ।
कहै 'रतनाकर' बियोग-आगि सारन कौं
ऊधौ हाय हमकौं बयारि भखिबौ कहौ।।
रूप-रस-हीन जाहि निपट निरूपि चुके
ताकौ रूप ध्याइबौ औ रस चखिबौ कहौ।
एते बड़े बिस्व माँहिं हेरैं हूँ न पैयै जाहि,
ताहि त्रिकुटी मैं नैन मूँदि लखिबौ कहौ।।5।।

आए हौ सिखावन कौं जोग मथुरा तैं तौपै
ऊधौ ये बियोग के बचन बतरावौ ना।
कहै 'रतनाकर' दया करि दरस दीन्यौ
दुख दरिबै कौं, तोपै अधिक बढ़ावौ ना।।
टूक-टूक ह्वैहै मन-मुकुर हमारौ हाय
चूकि हूँ कठोर-बैन-पाहन चलावौ ना।
एक मनमोहन तौ बसिकै उजार्‌यौ मोहिं
हिय मैं अनेक मनमोहन बसावौ ना।।6।।

ऊधौ यहै सूधौ सौ सँदेस कहि दीजौ एक
जानति अनेक न बिबेक ब्रज-बारी हैं।
कहै 'रतनाकर' असीम रावरी तौ छमा
छमता कहाँ लौं अपराध की हमारी हैं।।
दीजै और ताजन सबै जो मन भावै पर
कीजै न दरस-रस बंचित बिचारी हैं।
भली हैं बुरी हैं औ सलज्ज निरलज्ज हू हैं
जो कहैं सो हैं पै परिचारिका तिहारी हैं।।7।।

धाईं जित तित तैं बिदाई-हेत ऊधव की
गोपी भरीं आरति सँभारति न साँसुरी।
कहै 'रतनाकर' मयूर-पच्छ कोऊ लिए
कोऊ गुंज-अंजली उमाहै-प्रेम-आँसुरी।।
भाव-भरी कोऊ लिए रुचिर सजाव दही
कोऊ मही मंजु दाबि दलकति पाँसुरी।
पीत पट नंद जसुमति नवनीत नयौ
कीरति-कुमारी सुरबारी दई बाँसुरी।।8।।

प्रेम-मद-छाके पग परत कहाँ के कहाँ
थाके अंग नैननि सिथिलता सुहाई है।
कहै 'रतनाकर' यौं आवत चकात ऊधौ
मानौ सुधियात कोऊ भावना भुलाई है।।
धारत धरा पै ना उदार अति आदर सौं
सारत बँहोलिनि जो आँसु-अधिकाई है।

एक कर राजै नवनीत जसुदा कौ दियौ
एक कर बंसी बर राधिका-पठाई है।।9।।

ब्रज-रज-रंजित सरीर सुभ ऊधव कौ
धाइ बलबीर ह्वै अधीर लपटाए लेत।
कहै 'रतनाकर' सु प्रेम-मद-माते हेरि
थरकति बाँह थामि थहरि थिराए लेत।।
कीरति-कुमारी के दरस-रस सद्य ही की
छलकनि चाहि पलकनि पुलकाए लेत।।
परन न देत एक बूँद पुहुमी की कोंछि
पोंछि-पोंछि पट निज नैननि लगाए लेत।।10।।

छावते कुटीर कहूँ रम्य जमुना कैं तीर
गौन रौन-रेती सौं कदापि करते नहीं।
कहै 'रतनाकर' बिहाइ प्रेम-गाथा गूढ़
स्रौन रसना मैं रस और भरते नहीं।।
गोपी ग्वाल बालनि के उमड़त आँसू देखि
लेखि प्रलयागम हूँ नैकु डरते नहीं।
होतौ चित चाब जौ न रावरे चितावन कौ
तजि ब्रज-गाँव इतै पाँव धरते नहीं।।11।। **('उद्धव शतक' से)**

गंगावतरण

['गंगावतरण' खण्डकाव्य में 'रत्नाकर' जी ने सगर-पुत्रों के उद्धार के लिए महाराजा भागीरथ की तपस्या के परिणामस्वरूप गंगा के पृथ्वी पर आगमन का वर्णन किया है। प्रस्तुत छन्दों में गंगा के आकाश से पृथ्वी की ओर तीव्र वेग से आने एवं शिवजी की जटाओं में धारण किये जाने का काव्यमय चित्रण हुआ है।]

निकसि कमंडल तैं उमंडि नभ-मंडल-खंडति।
धाई धार अपार वेग सौं वायु विहंडति।।
भयौ घोर अति शब्द धमक सौं त्रिभुवन तरजे।
महामेघ मिलि मनहु एक संगहिं सब गरजे।।1।।
निज दरेर सौं पौन-पटल फारति फहरावति।
सुर-पुर के अति सघन घोर घन घसि घहरावति।।
चली धार धुधकारि धरा-दिसि काटति कावा।
सगर-सुतनि के पाप-ताप पर बोलति धावा।।2।।

स्वाति-घटा घहरावति मुक्ति-पानिप सौं पूरी।
कैधौं आवति झुकति सुभ्र आभा रुचि रूरी।।
मीन-मकर-जलव्यालनि की चल चिलक सुहाई।
सो जनु चपला चमचमाति चंचल छबि छाई।।3।।

रुचिर रजतमय कै बितान तान्यौ अति विस्तर।
झरति बूँद सो झिलमिलाति मोतिनि की झालर।।
ताके नीचैं राग-रंग के ढंग जमाये।
सुर-बनितनि के बृंद करत आनंद-बधाये।।4।।

कबहुँ सु धार अपार बेग नीचे कौं धावै।
हरहराति लहराति सहस जोजन चलि आवै।।
मनु बिधि चतुर किसान पौन निज मन कौ पावत।
पुन्य-खेत-उतपन्न हीर की रासि उसावत।।5।।

इहिं बिधि धावति धँसति ढरति ढरकति सुख-देनी।
मनहुँ सँवारति सुभ सुर-पुर की सुगम निसेनी।।
बिपुल बेग बल विक्रम कैं ओजनि उमगाई।
हरहराति हरषाति संभु-सनमुख जब आई।।6।।

भई थकित छवि चकित हेरि हर-रूप मनोहर।
ह्वै आनहि के प्रान रहे तन धरे धरोहर।।
भयो कोप कौ लोप चोप औरै उमगाई।
चित चिकनाई चढ़ी कढ़ी सब रोष रुखाई।।7।।

कृपानिधान सुजान संभु हिय की गति जानी।
दियौ सीस पर ठाम बाम करि कै मनमानी।।
सकुचति ऐचति अंग गंग सुख संग लजानी।
जटा-जूट हिम कूट सघन बन सिमिटि समानी।।8।।

('गंगावतरण' से)

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित *प्रश्न*

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(उद्धव-प्रसंग)

(क) कान्ह-दूत कैधौं ब्रह्म-दूत ह्वै पधारे आप
धारे प्रन फेरन कौ मति ब्रजबारी की।
कहै 'रतनाकर' पै प्रीति-रीति जानत ना
ठानत अनीति आनि रीति लै अनारी की।।
मान्यौ हम, कान्ह ब्रह्म एक ही, कह्यौ जो तुम
तौहूँ हमें भावति ना भावना अन्यारी की।
जैहै बनि बिगरि न बारिधिता बारिधि की
बूँदता बिलैहैं बूँद बिबस बिचारी की।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं रचनाकार का नाम लिखिए।
(ii) गोपियों ने उद्धव को अनाड़ी क्यों बताया है?
(iii) इस पद्यांश में किस बात का प्रतिपादन किया गया है?
(iv) गोपियों ने 'ब्रह्म-दूत' किसे कहा है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ख) चिंता-मनि मंजुल पँवारि धूर-धारनि मैं
काँच-मन-मुकुर सुधारि रखिबौ कहौ।
कहै 'रतनाकर' बियोग-आगि सारन कौं

ऊधौ हाय हमकौं बयारि भखिबौ कहौ।।
रूप-रस-हीन जाहि निपट निरूपि चुके
ताकौ रूप ध्याइबौ औ रस चखिबौ कहौ।
एते बड़े बिस्व माँहिं हेरैं हूँ न पैयै जाहि,
ताहि त्रिकुटी मैं नैन मूँदि लखिबौ कहौ।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गोपिकायें उद्धव से क्या कहती हैं?
(iii) प्रस्तुत पद्य में किस बात को प्रतिपादित किया गया है?
(iv) "काँच-मन-मुकुर सुधारि रखिबौ कहौ।" इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ग) आए हौ सिखावन कौं जोग मथुरा तैं तौपै
ऊधौ ये बियोग के बचन बतरावौ ना।
कहै 'रतनाकर' दया करि दरस दीन्यौ
दुख दरिबै कौं, तोपै अधिक बढ़ावौ ना।।
टूक-टूक ह्वैहै मन-मुकुर हमारौ हाय
चूकि हूँ कठोर-बैन-पाहन चलावौ ना।
एक मनमोहन तौ बसिकै उजार्‌यौ मोहिं
हिय मैं अनेक मनमोहन बसावौ ना।। **[2019 CL]**

प्रश्न– (i) इस पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ii) उद्धव को उपदेश देने के लिए किसने भेजा था?
(iii) 'बैन-पाहन' में अलंकार का उल्लेख कीजिए।
(iv) इस पद्यांश में किस रस की अभिव्यक्ति है?
(v) रेखांकित अंश का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(घ) प्रेम-मद छाके पग परत कहाँ के कहाँ
थाके अंग नैननि सिथिलता सुहाई है।
कहै रतनाकर यौं आवत चकात ऊधौ
मानौ सुधियात कोऊ भावना भुलाई है।।
धारत धरा पै ना उदार अति आदर सौं
सारत बँहोलिनि जो आँसु-अधिकाई है।
एक कर राजै नवनीत जसुदा कौ दियौ
एक कर वंशी बर राधिका-पठाई है।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) विदाई के बाद उद्धव किस प्रकार लौट रहे थे?
(iv) प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों में किसकी विचित्र दशा का वर्णन हुआ है?
(v) उद्धव जब ब्रज से मथुरा के लिए प्रस्थान किये तो उन्हें किस-किस ने विदाई दी थी?

(ङ) छावते कुटीर कहूँ रम्य जमुना कैं तीर
गौन रौन रेती सौं कदापि करते नहीं।

कहै 'रतनाकर' बिहाइ प्रेम-गाथा गूढ़
स्रौन रसना मैं रस और भरते नहीं।
गोपी ग्वाल बालनि के उमड़त आँसू देखि
लेखि प्रलयागम हूँ नैकु डरते नहीं।
होतौ चित चाब जौ न रावरे चितावन को
तजि ब्रज-गाँव इतै पाँव धरते नहीं।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उद्धव ब्रजभूमि से लौटकर श्रीकृष्ण से क्या कहते हैं?
(iv) उद्धव ने गोपियों तथा ग्वाल-बालों के उमड़ते अश्रुओं की तुलना किससे की है?
(v) उद्धव कहाँ बसने की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं?

(गंगावतरण)

(च) कृपानिधान सुजान संभु हिय की गति जानी।
दियौ सीस पर ठाम बाम करि कै मनमानी।।
सकुचति ऐचति अंग गंग सुख संग लजानी।
जटा-जूट हिम कूट सघन बन सिमिटि समानी।। **[2020 ZF]**

प्रश्न– (i) दिये गये पद्यांश के शीर्षक एवं रचनाकार का नाम लिखिए।
(ii) किसकी कोमल भावना को शिवजी जान गये?
(iii) इस पद्यांश में किस प्रसंग का चित्रण किया गया है?
(iv) उपर्युक्त पद्यांश किस छन्द में है?
(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(vi) गंगा के हृदय की बात किसने मानी?
(ii) शिवजी ने किसे स्त्री मान लिया और कहाँ स्थान दे दिया?
(viii) गंगा को किस प्रकार का अनुभव हुआ?
(ix) गंगा को शिव के जटा-जूट कैसे लग रहे हैं?

(छ) भई थकित छवि चकित हेरि हर-रूप मनोहर।
ह्वै आनहि के प्रान रहे तन धरे धरोहर।।
भयो कोप कौ लोप चोप औरै उमगाई।
चित चिकनाई चढ़ी कढ़ी सब रोष रुखाई।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) गंगा के प्राण एवं क्रोध के सम्बन्ध में क्या बताया गया है?
(iv) गंगा के मन में क्या इच्छा उत्पन्न हुई?
(v) प्रस्तुत पंक्तियों में किसके प्रति गंगा के अनुराग का अनुपम चित्रण हुआ है?

(ज) निकसि कमण्डल तैं उमंडि नभ मंडल-खंडति।
धाई धार अपार वेग सौं वायु विहंडति।।

भयौ घोर अति शब्द धमक सौं त्रिभुवन तरजे।
महामेघ मिलि मनहु एक संगहि सब गरजे।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) गंगा जी कहाँ से निकली हैं?
(iv) 'महामेघ मिलि मनहु एक संगहि सब गरजे' में कौन-सा अलंकार है?
(v) किसकी धमक से तीनों लोक डर गये?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) जैहे बनि बिगरि न बारिधिता बारिधि की,
बूँदता बिलैहै बूँद बिबस विचारी की।
(ख) एक मनमोहन तौ बसिकै उजार्‌यौ मोहिं।
हिय मैं अनेक मनमोहन बसावौ ना।
(ग) कान्ह-दूत कैधौं ब्रह्म-दूत ह्वै पधारे आप।
(घ) एते बड़े विश्व माँहि हैरैं हूँ न पैयै जाहि,
ताहि त्रिकुटी मैं नैन मूँदि लखिबौ कहौ।

2. रत्नाकरजी की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **[2017 MA]**

3. जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का जीवन-परिचय लिखिए।

अथवा जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का साहित्यिक परिचय तथा उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

4. जगन्नाथदास 'रत्नाकर' के जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
[2017 MA, MD, MF, 19 CM, CN, CO, 20 ZC]

अथवा जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का साहित्यिक परिचय तथा उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

5. रत्नाकरजी के 'उद्धव-प्रसंग' की विशेषताएँ लिखिए।

6. रत्नाकरजी की काव्य-रचनाओं में भक्तिकालीन प्रवृत्तियों का निरूपण कीजिए।

7. 'रत्नाकरजी' की रचनाओं में रीतिकालीन कवियों का प्रभाव मिलता है। उदाहरणों द्वारा इस उक्ति को पुष्ट कीजिए।

8. सूरदासजी के 'भ्रमरगीत' के पठित पदों के साथ 'उद्धव शतक' के पदों की तुलना कीजिए और उनके साम्य एवं अन्तर पर प्रकाश डालिए।

9. रत्नाकरजी के 'उद्धव शतक' के आधार पर यह स्पष्ट कीजिए कि उन्हें मार्मिक स्थलों की भली प्रकार पहचान है।

10. 'गंगावतरण' के आधार पर रत्नाकरजी के काव्य-सौष्ठव की विवेचना कीजिए।

11. रत्नाकरजी द्वारा 'उद्धव प्रसंग' में व्यक्त प्रेम की हृदयस्पर्शी व्यंजना को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

12. 'उद्धव प्रसंग' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि रत्नाकर के काव्य में भावावेश के साथ-साथ कलात्मक सौष्ठव का भी समावेश है।

13. उद्धव प्रसंग के आधार पर सगुण भक्ति की महिमा का निरूपण कीजिए।

14. गोपियों और उद्धव के उत्तर-प्रत्युत्तर के माध्यम से निर्गुण ब्रह्म का खण्डन और सगुण ब्रह्म की स्थापना रत्नाकर ने किस प्रकार की? संक्षेप में लिखिए।

15. रत्नाकरजी के 'उद्धव शतक' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि उन्हें मार्मिक स्थलों की भली-भाँति पहचान है।

16. "रत्नाकर के काव्य में भक्तिकालीन भावधारा और रीतिकालीन कला सौष्ठव का अद्‌भुत समन्वय है।" उदाहरण सहित समझाइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. उद्धव के ज्ञानोपदेश को सुनकर गोपियों ने क्या तर्क दिये?
2. गोपियों के कृष्ण-प्रेम को देखकर मथुरा लौटते समय उद्धव की क्या दशा हुई?
3. रत्नाकर के काव्य में किन प्रवृत्तियों का निरूपण मिलता है?
4. रत्नाकर लिखित 'गंगावतरण' के वर्णन-कौशल का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
5. उद्धव प्रसंग के आधार पर सगुण भक्ति की महिमा का निरूपण कीजिए।
6. "उद्धव शतक' में गोपियों की तर्कपूर्ण उक्तियाँ अतिशय मार्मिक हैं।" सोदाहरण सिद्ध कीजिए।
7. भ्रमरगीत परम्परा में 'उद्धव-शतक' का स्थान निर्धारित कीजिए।

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (क) कोमल करेजौ थामि सहमि सुखानी हैं।
   (ख) ताहि त्रिकुटी मैं नैन मूँदि लखिबौ कहौ।
   (ग) टूक टूक ह्वैहै मन-मुकुर हमारौ हाय।
2. शृंगार रस का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत पाठ से विप्रलम्भ (वियोग) शृंगार का एक उदाहरण लिखिए।
3. अनुप्रास अलंकार का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत पाठ से एक उदाहरण लिखिए।